International Journal of Applied Research 2018; 4(3): 540-542

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(3): 485-487
www.allresearchjournal.com
Received: 18-01-2018
Accepted: 24-02-2018

डॉ० रामपाल
संस्कृत विभाग, के0 ए0 (पी0जी0) कॉलेज, कासगं, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ० रामपाल
संस्कृत विभाग, के0 ए0 (पी0जी0) कॉलेज, कासगं, उत्तर प्रदेश, भारत

पाणिनीय एवं पाल्यकीर्ति शाकटायन व्याकरण में तिङन्तपद विवेचन

डॉ० रामपाल

सारांश
पाणिनीय व्याकरण एवं शाकटायन व्याकरण के तिङन्तपद विवेचन को निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया है–– तिङन्त प्रकरण के विहंगावलोकन से पाल्यकीर्ति शाकटायन की मौलिक कल्पना दृष्टिगोचर होती है। पाल्यकीर्ति शाकटायन ने शब्द साधुत्व की दृष्टि से पाणिनि परम्परा का ही अनुसरण किया है। इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि पाणिनि व्याकरण की पूर्णता होने पर भी पाल्यकीर्ति शाकटायन के व्याकरण का उद्देश्य संक्षेपीकरण एवं धार्मिक प्रवृत्ति के प्रति आस्था रही होगी। तिङन्त प्रकरण में ऐसे ही कतिपय मुख्य स्थलों को आधार बनाते हुए शोध सारांश प्रस्तुत है।

तिङन्त वैशिष्ट्य
शाकटायन ने पाणिनि के लकारों को किञ्चित् अन्तर एवं भेद के साथ ग्रहण किया है। यहाँ लकार सम्बन्धी विवेचन तुलनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत है––

	पाणिनि अष्टाध्यायी	शाकटायन व्याकरण
1.	वर्तमाने (लट्) 3.2.123	सति (लट्) 4.3.217
2.	परोक्षे (लिट्) 3.2.115	परोक्षे (लिट्) 4.3.212
3.	अनद्यतने (लुट्) 3.3.15	परिदेवनानद्यतने (लुट्) 4.3.283
4.	(लृट्) शेषे च 3.3.13	(लृट्) 4.3.282
5.	लोट् च 3.3.162	(लेट्) 4.4.125, 4.3.288
6.	अनद्यतने लङ् 3.2.111	(लङ्) 4.3.207
7.	आशिषि लिङ्लोटौ 3.3.173	(लिङ्) लेङाशिषि 4.4.136
8.	लुङ् 3.2.110	लुङ् 4.3.205
9.	लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ 3.3.139	लृङ् 4.4.108
10.	लिङ् 3.3.144	इच्छार्थे लेङ् लेट् 4.4.125

आचार्य शाकटायन ने यहाँ लकार विवेचन में प्रत्याहार सूत्रों में उपलब्ध स्वरों (अ, इ, उ, ऋ तथा ए) का क्रमानुसार ग्रहण करते हुए उनको ट् एवं ङ् अनुबन्धों सहित ल् के परे युक्त किया है। फलस्वरूप– लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लेट, लङ्, लिङ्, लुङ, लृङ् एवं लेङ– 10 लकारों में रूप सिद्ध किये हैं।

आचार्य शाकटायन ने विधिलिङ् एवं आर्शीलिङ् के स्थान पर क्रमशः लिङ् एवं लेङ् पृथक्–पृथक् संज्ञायें दी हैं। इस प्रकार शाकटायन ने आर्शीलिङ् का तो "लिङ्" लकार से ही निर्देश किया है। किन्तु "विधिलिङ्" के लिए "लेङ्" का प्रयोग करते है। आचार्य शाकटायन ने "लेट्" लकार में भी धातुओं के रूप सिद्ध किये हैं। शाकटायन व्याकरण में 'लेट्' शब्द को देखकर पाठक को भ्रम हो सकता है कि शायद शाकटायन ने वैदिक 'लेट्' लकार का प्रतिपादन भी किया हो वस्तुतः ऐसा है नहीं, शाकटायन ने केवल अपनी मौलिकता के लिए ही 'लेट्' लकार का प्रयोग किया है।

1. लकार सम्बन्धी शब्दावली भेद–

	पाणिनि अष्टाध्यायी	शाकटायन व्याकरण
1.	लट स्मे। 3.2.118	स्मे च लट्। 4.3.215
2.	ननौ पृष्टप्रतिवचने। 13.2.120	ननौ पृष्टोक्तौ। 4.3.216
3.	वर्त्तमाने लट्। 3.2.123	सति। 4.3.217
4.	लृट् शेषे च। 3.3.13	लृट्। 4.3.282
5.	अनद्यतनेलुट्। 3.3.15	परिदेवनानद्यतने लुट्। 4.3.283
6.	यावत्पुरानिपातयोर्लट्। 3.3.4	पुरायावतोर्लट्। 4.3.284
7.	विभाषा कदाकर्ह्यो। 3.3.5	कदाकर्ह्योर्वा। 4.3.285
8.	किंवृत्ते लिप्सायाम्। 3.3.6	किंवृत्ते[र्थित्वे। 4.3.286
9.	लिङ् चौर्ध्वमौहिर्त्तके।	लेङ् चोर्ध्वमौर्हितके। [1] 4.3.289
10.	क्षिप्रवचने लृट्। 3.3.133 आशंसावचने लिघ्। 3.3.134	क्षिप्राशंसार्थे लृट् लेघ्। [2] 4.4.104
11.	नानद्यतनवत्क्रियाप्रबन्धसमीप्ययोः। 3.3.135	अद्येवासन्न विच्छित्तयोः। 4.4.105
12.	कालविभागे चानहोरात्राणाम्। 3.3.137	वर्त्स्यनहोरात्रोऽवोऽवधै। 4.4.106 काले परे वा। 4.4.107
13.	लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ। [3] 3.3.139	लेङनिमित्तेऽवृत्तौ भूते च लृङ्। 4.4.108, वाऽशेषात्। 4.4.109

2. शब्दावली भेद–

	पाणिनि अष्टाध्यायी	शाकटायन व्याकरण
1.	गर्हायां लङपिजात्वोः। 3.3.142	गर्हेऽपिजात्वो र्लट्। [4] 4.4.110
2.	विभाषा कथमि लिङ् च। 3.3.143	कथमि लेङ् च वा। 4.4.111
3.	किंवृत्ते लिङ्लृटौ। 3.3.145	किंवृत्ते लेङ्लृटौ। 4.4.112
4.	अनवक्लृप्त्य...। 3.3.145	अमर्षाश्रद्धेऽन्यत्रापि। 4.4.113
5.	किंकिलास्त्यर्थेषु लृट्। 3.3.146	किंकिलास्त्यर्थयोर्लृट्। 44.114
6.	जातुयदोर्लिङ्। 3.3.147	यद्यदियदाजातौ लेङ्। 4.4.115
7.	यच्चयत्रयोः। 3.3.148	गर्हेऽपि च यच्चयत्रे। 4.4.16
8.	गर्हायां च। 3.3.149	चित्रे। [5] 4.4.117
9.	शेषे लृड यदौ। 3.3.151	लृट्शेषेऽपदौ। 4.4.118
10.	उताप्योः समर्थयो र्लिङ्। 3.3.152	वाढेऽप्युते [6] लेङ्। 4.4.119
11.	सम्भावने...। 3.3.154	सम्भाव्येऽलम्यर्थात्। [7] 4.4.120
12.	विभाषा धातौ...। 3.3.155	धातूक्तौ वा यदि। 4.4.121
13.	हेतुहेतु...। 3.3.156	सतीच्छार्थात्। 4.4.122
14.	इच्छार्थेषु...। 3.3.157	वर्त्स्यति फलकारणे। 4.4.123
15.	कामप्रवेदनेऽकच्चिति। 3.3.153	कामाविष्कारेऽकच्चिति। [8] 4.4.124
16.	इच्छार्थेषु लिङ लोटौ। 3.3.157	इच्छार्थे [9] लेङ् लेट्। 4.4.125
17.	विधिनिमन्त्रणा...। 3.3.161	विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थने। 4.4.126
18.	प्रैषातिसर्ग...। 3.3.163	प्रैषानुज्ञावसरे लेट् घ्यप्। 4.4.127
19.	लिङ् चौर्ध्व मौहूर्त्तिके। 3.3.9	लेङ् चौर्ध्वं मुहूर्तात्। 4.4.128
20.	लट् स्मे। 3.2.118	लेट् स्मे। [10] 4.4.129
21.	अधीष्टे च। 3.3.166	अधीष्टे। 4.4.130
22.	अर्हे कृत्यतृचश्च। 3.3.169	तृघ्यप् चार्हे। 4.4.133
23.	आवश्यक...। 3.3.170	णिन्घ्यपावावश्यकाधर्मर्ण्ये। 4.4.134
24.	शकि लिङ् च। 3.3.172	शक्तौ लेङ्घ्यप्। [11] 4.4.135
25.	आशिषि लिङ् लोटौ। 3.3.176	माघि लुङ्। 4.4.137
26.	स्मोत्तरे लङ् च। 3.3.176	लङ् च स्मेन। 4.4.138
27.	आभीक्ष्ण्येणमुल् च। 3.4.22	भृशाभीक्ष्ण्ये लेट् तस्मिंस्तथार्थे। 4.4.139
28.	अभाव	प्रचये वा सामान्यार्थे। 4.4.140

संदर्भ

1. निपातनात् सिद्धिः। लेडन्त उपपदे लेटो लेडन्तार्थस्य हेतौ उर्ध्वमौर्हितिकेवर्त्स्यत्यर्थे वर्तमानाद्धातोर्लेङ् च लट् च वा भवतः। पक्षे लृटलुटौऽपि भवतः।।
2. आचार्य शाकटायन ने आशंसा अर्थ में वर्तमान क्षिप्रधातु से लृट् एवं लेङ् ये दो प्रत्यय किये है। "वाऽऽशंस्ये सदभूद्वदित्येतस्य लुटश्चापवादः। उपाध्यायश्चेदागच्छति, आगमत, आगमिष्यति, आगन्ता क्षिप्रमाशु त्वरितं शीघ्रम□याध्येष्यामहे। आशंसेसंभावयेऽवकल्पये युवतोऽधीयीय। द्वयोरूपपदयोर्लेङ भवति। शब्दतः परत्वादाशंसे। क्षिप्रमधीयीय।"
3. काल इति किम्? आपिष्टपुराद् गन्तव्येऽस्मिन्नध्वनि पौदनस्य पुरस्तादवच्छिन्नं सूत्रमध्येष्यामहे।।
4. आचार्य शाकटायन ने पाणिनि शब्दावलीक्रम में अन्तर करके अपने मन्तव्य को टीका में स्पष्ट किया है– "वर्तमाने लडुक्तः कालसामान्ये न प्राप्नोतीति विधीयते कालविशेषविहितानपि प्रत्ययानयं परत्वादस्मिन्विषये वाधते। क.म.टि.।" "कालसामान्य इत्यनेन भविष्यतीत्यादेः कालविशेषवाचिनोऽन– नुवृत्तिंदर्शयति।।"

5. चित्रामाश्चर्यं अद्भुतं विस्मयनीयम्। यच्ययत्रपोरुपपदयोः चित्रेऽर्थे गम्यमाने धार्तोलेङ भवति। चित्रमाश्चर्यं यच्च तत्र भवानकल्प्यं सेवेत्, (अत्र भवान तत्र भवान पूज्ये च भगवानिति)।।
6. वाढार्थयोरप्युत इत्येतयोरुपपदयोर्धातोर्लेङ् प्रत्ययो भवति। अपि कुर्यात् उत कुर्यात् वाढं करिष्यतीत्यर्थः। एवमप्यधीवीत्।। वाढ इति किम्? अपि दास्यति द्वारं उत दण्डः पतिष्यति। अत्र प्रच्छादनं प्रश्नार्थः। उतावलस्य बलवानुत वालस्य पण्डितः।
7. आचार्य शाकटायन ने उपरोक्त सूत्र में कई बिन्दुओं पर प्रकाश डाला है यथा– अपि पुण्डरीकमध्यायमिहाधीयीत। सम्भाव्यत एतच्छक्त इत्यर्थः। शब्दस्य द्वावात्मानौ अर्थः स्वरूपञ्च तत्र स्वरूपव्युदासार्थमर्थग्रहणम्। अत्र लेङनिमित्तमस्तीत्यवृत्तौ लृङपि वज्रहतो नापतिष्यत्। आशंसाभिलाषो भविष्यकालासम्भावना पुनः श्रद्धानं प्रत्ययस्त्रिकालविषयेत्याशंस्यसम्भाव्यर्येविशेषः। उपर्युक्त व्याख्या से उनके व्यापक दार्शनिक ज्ञान का पता चलता है।
8. आचार्य शाकटायन ने शब्दावली में परिवर्तन करके अपने मन्तव्य को प्रस्तुत किया है, जैसा कि उनकी टीका से विदित है– "काम इच्छाभिप्रायः। तस्या विष्कारे प्रवेदने धर्तोलेङ् प्रत्ययो भवति अकच्चिति कच्चिच्छब्दश्चेन्न प्रयुज्यते। कामो मे भुञ्जीतभवान्, इच्छा में भुञ्जीत भवान, इत्यादि में पाणिनि के लिङ लकार की जगह लेङ लकार पढ़ा है। अन्यत्रा भेद नहीं है।
9. इच्छार्थे उपपदे कामाविष्कारे धर्तोलेङ् लेट् इत्येतौ प्रत्ययौ भवतः। इच्छामि कामये प्रार्थये भुञ्जीत भवान् भुङक्तां भवान्। कामाविष्कार इति किम्? इच्छन् करोति। अत्रावृत्तौ परत्वाल्लेटा लृङ वाध्यते। केवले हि लेङविधौ लृङवचनंसावकाशमेवमुत्तरत्रापि।।
10. आचार्य शाकटायन ने पाणिनि द्वारा पठित लट् प्रत्यय को लेट् प्रत्यय पढ़ा है। अन्तर स्पष्ट नहीं किया है।
11. लेङ विधीयते घ्यप्ग्रहणं त्वबाधनार्थम्।